किसानों की
आवाज
का दस्तावेज

cecoedecon

सीमित वितरण हेतु

आवाज...

वर्ष –13 अंक –21 अप्रेल 2024 –मार्च 2025

किसान सेवा समिति महासंघ

Contact Phone: 91-7414038811 / 7414038822 • www.cecoedecon.org.in

समस्याओं को लेकर दिए ज्ञापन

अमिट अक्षर

सहरिया समाज की विभिन्न समस्याओं को लेकर सौंपा ज्ञापन

(अमिट अक्षर)

भीतर के पन्नों में

1. सम्पादकीय
2. प्रकृति पूजा – हमारी संस्कृति
3. ग्लोबल वार्मिंग – दुःप्रभाव
4. कौन धणी–धोरी है गोवंश का?
5. भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद के समझौते पर बहस
6. ऐसा है किसान
7. न गाडी, न बैंक बैंलेन्स– ऐसे थे महामहिम डॉ. अब्दुल कलाम
8. चरागाह में विकास कैसे
9. पर्यावरण प्रेमी –गुरूजी
10. जब वृद्धजनों का आत्म सम्मान बढ़ा
11. नाड़ी खुदाई–पश्चिमी राजस्थान की एक महत्ती आवश्यकता
12. महिलाओं की सुरक्षा के लिए उठाया कदम
13. सहरिया क्षेत्र के मुद्दों पर मुख्य सचिव जी से संवाद
14. अतिक्रमण मुक्त हुई गोचर भूमि
15. चारागाह में वृक्षारोपण
16. जैविक कृषि की ओर बढते कदम
17. और यातायात सुलभ हुआ
18. अदभुद बलिदान
19. थाली में खाने को मिली हरी सब्जी

किसान सेवा समिति महासंघ
(स्वराज कैम्पस), एफ–159–160
सीतापुरा औद्योगिक एवं संस्थागत
क्षेत्र, जयपुर–302022
द्वारा प्रकाशित

संरक्षक व मार्गदर्शन :
श्रीमती मंजू जोशी

संपादक :
भगवान सहाय ढाधीच

ग्राफिक्स :
रामचन्द्र शर्मा एवं भँवरलाल

सम्पादकीय .....

जिस आम आदमी, गरीब, किसान, मजदूर का बेटा सीमा पर पहरेदारी कर मातृभूमि की रक्षा करता है। देश के भीतर अपराध एवं भ्रष्टाचारी व्यवस्था से लड़ता है, खेत पर भूख से लड़कर देश को खाद्यान्न में आत्म– निर्भर बनाने हेतु खून–पसीना बहाता है। कल–कारखानों में उत्पादन बढ़ा देश का भविष्य गढता है। ये कैसा लोकतन्त्र है कि उसी आम आदमी को भ्रष्ट चुनावी तन्त्र के चलते, संसद एवं विधानसभाओं में नेतृत्व करने के अधिकार से वंचित रखने का खेल चल रहा है।

नैतिक–अनैतिक तरीके से कमाये धन के बल पर धनिक वर्ग सत्ता पर काबिज हो रहे हैं। चौधरी चरण सिंह ने अपनी पुस्तक में भारत की दुर्दशा का वर्णन करते हुये लिखा है कि किस तरह दौलत पैदा करने वाला अपने आपको विवश समझता है, उसकी मेहनत पर किस तरह थोड़े लोग धन का संचय करके बड़े लोग बन जाते हैं। आज यह कथन कितना प्रासंगिक है कि लोकतन्त्र की आत्मा आम आदमी, जिसके अपने आदर्श है, नैतिक मूल्य है पर धन न होने से चुनावी दौड़ से बाहर हो रहा है। अवसरवादी, दलबदलू, राजनेता, दलाल एवं पूंजीपतियों का गठजोड़ देश के नीति निर्माण में लगे है।

मीडिया का एक वर्ग इस गठजोड़ को महिमा मण्डित करने में लगा है। मीडिया का एक वर्ग डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, रफी अहमद किदवई, लाल बहादुर शास्त्री, राम मनोहर लोहिया, डॉ. अम्बेडकर, पं. दीन दयाल उपाध्याय, ज्योति बसु, मणिक सरकार, नानाजी देशमुख जैसे वैचारिक रूप से समृद्ध राजनेताओं की चर्चा करना पिछड़ापन मानता है। देश का ऐसा प्रेरणादायी नेतृत्व अब कहां है?

मीडिया की भूमिका व्यापारी की नहीं बल्कि समाज निर्माण एवं लोक शिक्षक की रहती है, पर भ्रष्ट चुनाव प्रणाली पर वह भी खामोश है। अपने देश में राजनीति सेवा का माध्यम रही है। विकास के वही प्रोजेक्ट बनाये जा रहे है, जिसमें भ्रष्ट तरीके से राजनेताओं की सम्पत्ति 5 वर्ष में 10 से 50 गुना तक बढ़ जाती है। आज सत्ता में बने रहने के लिये आरोपित नेताओं को संरक्षण दो, किसानों का उसका समर्थन मूल्य मत दो, उसकी भूमि लूटो, सरकारी उपक्रमों को लूटो की राजनीति चल रही है।

चुनाव में धन के प्रभाव को रोकने के लिये देश के प्रबुद्ध वर्ग द्वारा चिन्ता व्यक्त की जा रही है, पर चुनाव में धन के दुरूपयोग रोकने हेतु पर्याप्त कानून नहीं है। होना यह चाहिये कि राजनेताओं के आय के स्त्रोत के साथ उनके खर्चों की जॉच कानूनी दायरे में आये। संगीन आरोपी नेताओं के चुनाव लड़ने पर स्थायी रोक लगे, यह सरकार से अपेक्षा करना निरर्थक है।

आम–जन में जन–जागरण अभियान चला, दलबदलू भ्रष्ट राजनेताओं को चाणक्य की राह पर चलकर सत्ता से बेदखल करना समय की मांग है। क्योंकि राजनीति एवं राजनेताओं के भ्रष्टाचार को रोके बिना जीवन के अन्य क्षेत्रों के भ्रष्टाचार को समाप्त करना असम्भव है।

प्रकृति पूजा – हमारी संस्कृति

मानव समाज ने धरती को अब तक बहुत घायल कर दिया है। यही स्थिति बनी रही तो इस सृष्टि से मानव प्रजाति और उसकी संस्कृति निश्चित ही विलुप्त हो जाएगी। पिछले 200 वर्षों से हमने जीवांश ईंधन का इस कदर दोहन किया कि ऊर्जा प्रदान करने वाले इस द्रव्य के अकूत भंडार खोखले हो चुके हैं। अब प्रकृति में संतुलन स्थापित करने हेतु एक मात्र विकल्य यह है कि हमने इस धरती को जो घाव दिये हैं, उनकी भरपाई कर पृथ्वी की आरोग्यता को बढ़ाया जाए। ऐसा करने के लिये मानव समाज में एकता का संचार और भविष्य के प्रति एक सकारात्मक आशा बनाए रखना परम आवश्यक है। देश का नागरिक होने के नाते हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करें और यह सब स्वदेशी की जीवटता और व्यावहारिकता से ही सम्भव है।

धरती को संरक्षित करने का अर्थ है, हमारे घरों, हमारे परिवारों और हमारी संस्कृतियों का संरक्षण। यह एक ऐसा कर्त्तव्य है जो कि हमारे जीवन, हमारे समाज और हमारी पारिस्थितिकी को बनाए रखने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसी कर्त्तव्य के माध्यम से हम मुक्त व्यापार के चलते नष्ट हो रही प्रकृति, कृषि, भोजन, अर्थव्यवस्था और अंततः स्वतंत्रता की रक्षा कर सकेंगे।

मशीनीकरण और मनी मशीन हमारी रचनात्मकता को कम करती है। यह प्रकृति और मनुष्यों का शोषण करती है। हमारा धरती रूपी यह परिवार अच्छा भोजन, अच्छे कपड़े, अच्छा स्वास्थ्य, अच्छी संस्कृति के साथ आरोग्य एवं सम्पन्नता प्रदान करती है। अपने खेतों में हाथों से काम करना, खेती की मिट्टी को अपनी उंगलियों से सहलाना, कृषि संस्कृति को मज़बूती देना है। हाथ से काम करने पर कोई छोटा नहीं होता, बल्कि मनुष्य की तारतम्यता धरती से और भी घनिष्ठ हो जाती है। अपना काम अपने हाथों से करना हमें मशीनों की गुलामी, जीवाश्म ईंधनों की गिरफ्त से बचाती है।

महात्मागांधी ने लिखा, ''यह विडम्बना है कि अधिकतर लोग हाथ पर हाथ रखकर बैठे होते हैं। प्रकृति ने हमें हाथों के रूप में एक अनुपम भेंट दी है, हमें इनका सम्मान करना चाहिए। यदि मशीनों पर हमारी निर्भरता यूं ही बनी रही तो हम अपने हाथों की उपयोगिता को ही भूल जाऐंगे।''

अपने हाथों को कम आंकने का मतलब अपनी क्षमताओं को कम करना तथा मनुष्य को वस्तु समझकर श्रमिक के रूप में बेच देना है।

हाथ हमारे श्रमशीलता के परिचायक हैं। हाथों से काम न लेने का मतलब निट्ठलेपन की अभिव्यक्ति देना है। हमारे साथ हमारे सम्मान के आधार हैं, हाथों की रचनात्मकता से परिश्रम और स्वावलम्बन आता है। स्वावलम्बन से विदेशी यानि स्थानीय अर्थव्यवस्था और सम्पन्नता प्राप्त होती है। प्रत्येक समाज में कामकाजी लोगों को सम्मानपूर्वक देखा जाता है। महिलाएं और किसान उन्हीं सम्मानित लोगों में से एक हैं। वे एक प्रतिशत लोग, जो जमीन से जुड़े लोगों को कम आंकते और वास्तविक श्रम को हीन भाव से देखते हैं, वे सट्टेबाज, जुआरी और डकैत किस्म के होते हैं। इस तरह के लोग हमेशा दूसरों पर शासन करने की ताक में रहते हैं।

यह वैश्विक अर्थव्यवस्था की ही विडम्बना है कि अधिक श्रम करने वाले लोग अपनी आजीविका को कठिनता के साथ चला रहे हैं। वहीं दूसरे की सम्पत्ति को हड़पने वाले, प्राकृतिक सम्पदा पर एकाधिकार जमाने वाले और एक–दूसरे को आपस में लड़ाने वाले लोग अरबपति होते जा रहे हैं। ऐसे चंद किराया वसूलने और जुआरी लोगों के पास दुनियां की 50 प्रतिशत से भी अधिक सम्पत्ति है, ऐसे लोगों पर एक दृष्टि–

महात्मा गांधी ने सात ऐसी चीजों की पहचान की, जो सार्थक जीवन के आवश्यक तत्व है –

परिश्रम के बिना धन, चेतना के बिना प्रसन्नता, चरित्र के बिना ज्ञान, नैतिकता के बिना व्यवसाय, मानवता के बिना धन, सिद्धांतों के बिना राजनीति।

ग्लोबल वार्मिंग – दु:प्रभाव

वैश्विक तपन के कारण ग्लेशियर भी पिघलकर सिकुड़ते जा रहे हैं। हिमालय क्षेत्र में ये तेज़ी से पिघल रहे हैं और आने वाले समय में इनके कारण गाद भरी नदियों में भारी बाढ़ आ सकती है। ध्रुवों पर जमा बर्फ़ के बाद हिमालय में ही बर्फ़ के रूप में सबसे अधिक पानी जमा है। ग्लेशियरों के पिघलने से भारत, नेपाल और चीन में जल संकट पैदा हो सकता है।

बढ़ते तापमान के कारण पिछले 100 वर्षों में विश्व में समुद्रों का जल स्तर 10 से 25 से.मी. तक बढ़ चुका है। तापमान इसी तरह बढ़ता गया तो ग्लेशियरों के पिलघलने तथा सागरजल के गर्मी से फैलने के कारण समुद्रों का जल स्तर काफ़ी बढ़ जाएगा। इसके परिणाम भयानक होंगे। सागरतटों पर बसे शहरों के डूबने का ख़तरा पैदा हो जाएगा। महासागरों में स्थित तमाम द्वीप डूब जाएँगे। जलवायु परिवर्तन के कारण जल– प्लावन की यह प्रक्रिया कई क्षेत्रों में शुरू भी हो चुकी है। हमारे देश में सुन्दरवन क्षेत्र में घोड़ामारा द्वीप का क्षेत्रफल पहले 22,4000 बीघा था जो अब केवल 5,000 बीघा रह गया है। उस 5,000 की आबादी वाले द्वीप में अब केवल लगभग 3,500 लोग रह रहे हैं। उन्हें मालूम है कि उनका यह द्वीप जल्दी ही डूब जाएगा। वैज्ञानिकों का अनुमान है 2030 तक सुन्दरवन का करीब 15 प्रतिशत क्षेत्र डूब जाएगा।

संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि अगर सागरों का जलस्तर 1.5 मीटर बढ़ गया तो दुनिया भर में सागरतटों पर बसे करीब 2 करोड़ लोगों के डूबने का ख़तरा पैदा हो जाएगा। गंगा, ब्रह्मपुत्र और नील नदी के किनारे बसे शहर डूब सकते हैं। मुम्बई और कलकत्ता जैसे शहरों को लहरें घेर लेंगी। हालैंड, जमैका और मालद्वीव जैसे देश जलप्रलय की भेंट चढ़ जाएँगे। तापमान बढ़ने से हरियाली उत्तर की ओर सिमटती जाएगी। जिसके कारण लाखों पशु–पक्षियों का जीवन संकट में पड़ जाएगा। अनुमान है कि वैश्विक तपन के कारण 2050 तक पशु–पक्षियों और पेड़–पौधों की लगभग 10 लाख से अधिक जातियाँ नश्ट हो जाऐंगी।

जलवायु विज्ञानी बढ़ती वैश्विक तपन के कारण एक और आसन्न ख़तरे की ओर संकेत कर रहे हैं। वह ख़तरा है भीषण समुद्री तूफान और घनघोर बारिश। विगत लगभग पचास वर्षों में वायु मंडल की तपन से सागरों का पानी भी गरमा गया है जिसके कारण सागरों से उठने वाली बाप की मात्रा में काफ़ी इजाफा हुआ है। इस कारण तेज़ और भीषण समुद्री तूफानों की घटनाएँ बढ़ रही हैं। इसके अलावा वर्शा का पैटर्न भी बदल गया है। मौसम, बेमौसम, कहीं भी, कभी भी घनघोर बारिश हो जाती है। कहीं भीषण गर्मी पड़ रहीं होती है तो कहीं लम्बे समय तक भारी बर्फ़बारी होने लगती है। इस कारण खेती पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग यानि वैश्विक तापन बढ़ने से आबोहवा बदलती जा रही है। विश्व के कई भागों में भयंकर सूखा पड़ रहा है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं। एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और अमेरिका में पानी का भारी संकट शुरू हो चुका है। तापमान बढ़ने से फसलों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। नतीजतन उपज घटा रही है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि वर्षा पर आधारित खेती में फसलों की उपज आधी रह जाएगी। इस तरह अकाल का साया फैलता जायेगा और विश्व में भी ग़रीब वर्ग ही नहीं, मध्यम वर्ग भी भूख से बुरी तरह प्रभावित हो जाएगा। राजेश जोशी की कविता की पंक्तियाँ याद आती हैं– आषाढ़ के बादल बिना बरसे ही इस बार / उत्तर भारत से फ़रार हो गये थे / मानसून से पहले फुहारें भी इन इलाकों में नहीं पड़ी थीं / ...

समय हाथ से निकल रहा है। विश्व पर घिर रहे ग्लोबल वार्मिंग के इस महासंकट को रोकने के प्रयास अब हमें आपातकालीन स्तर पर शुरू कर देने चाहिए। बदलती आबोहवा के संकेतों के मारक कदमों को रोकना होगा। इसके लिए दुनिया के सभी देशों के नागरिकों के साथ ही नीति निर्धारकों और राजनेताओं को भी एकजुट होकर कार्बन–डाईऑक्साइड और ग्रीनहाउस गैसों की नकेल कड़ाई से कसनी होगी।

कौन धणी–धोरी है गो वंश का?

धर्म व संस्कृति की प्रतीक होने के साथ–साथ गो वंश भारत की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है। गाय का रोम–रोम हमें भौतिक, दैविक एवं आध्यात्मिक शक्ति का संचार करता है। पर आज किस दयनीय व विकट स्थिति में फंसा है, गो वंश एवं उसकी गोचर भूमि। गोचर भूमि दबंगों के अवैध कब्जे में है, राष्ट्रवादी सरकार का दावा करने वाली केन्द्र एवं राज्य सरकार गाय पर खामोश है, एकदम उदासीन। संसद में गो वंश एवं गोचर भूमि अतिक्रमण मुक्त पर कभी सार्थक चर्चा नहीं होती। प्रशासन की इस पर कोई स्पष्ट जवाबदेही तय नहीं है।

रोजाना टी. वी. चैनलों पर पूज्य सन्तों, महात्माओं के प्रवचनों, उपदेशों (कुछ अपवाद छोडकर) में वो धार नहीं है, जो गो वंश–पालन एवं गोचर भूमि अतिक्रमण मुक्त करने हेतु प्रभावी एवं निर्णायक कदम उठाने हेतु सरकार को बाध्य कर सकें व भारतीय जनमानस में गाय के प्रति मां का श्रृद्धाभाव जाग्रत कर सकें। आज हम जिस भी सड़क मार्ग से गुजरेंगे गो वंश भूखा–प्यासा भटकता दिखाई दे सकता है। आज हम सभी (नेतागण, पूज्य सन्तगण व जन समुदाय) को गो वंश का करूण कुन्दन सुनाई नहीं दे रहा। तभी तो गायों के चरने के लिये अनादिकाल से आरक्षित अधिकांश चरागाह भूमि पर दबंगों का अवैध कब्जा नहीं होता।

गोवंश रक्षा हेतु 28 अप्रेल, 1947 को पूज्य सन्त करपात्री जी महाराज के नेतृत्व में गोहत्या बन्दी हेतु आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, इसके बाद के आन्दोलनों में पूज्य करपात्री जी महाराज, श्री हनुमान प्रसाद पौद्धार, पूज्य प्रभूदत्त जी ब्रह्मचारी, परमपूज्य शंकराचार्य जी, पं. पूज्य गुरूजी आदि विभुतियों के नेतृत्व में लाखों गो भक्तों ने दिल्ली का घेराव किया, गिरफ्तारियां हुई, पर वे महान् विभूतियां न झूकी न रूकी। उनके आंदोलन में गाय के प्रति मां का भाव था, एक दर्द था, पीड़ा थी, गो रक्षा के लिये।

आज राज्य में गो हत्या पर प्रतिबन्ध है! पर गो वंश का धणी–धोरी नहीं दिख रहा। जबकि गो वंश भारतीय जीवन का आधार है, गाय का धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक (स्वास्थ्य परक) महत्व है। चेतना पर गोवंश की वर्तमान हालात चिन्ताजनक एवं मानव जीवन को शर्मसार करने वाली है। योगेश्वर भगवान कृष्ण, गो पालन, गो चराने, गो सेवा का अनुपम सन्देश भारतीय जन मानस में दिया कि गो साक्षात् माता है, जिसमें सभी देवताओं का निवास है।

पूजनीय पाबू जी, तेजाजी, गोगाजी ने गो रक्षा हेतु अपना बलिदान दिया, इसलिये आज ये भारत में लोक देवता के रूप में पूजे जाते हैं। गांव–गांव भगवान कृष्ण एवं उपरोक्त लोक देवताओं की नियमित पूजा करने वाला भारतीय समाज गो रक्षा व गोचर भूमि अतिक्रमण मुक्त पर चेतना शून्य क्यों हो रहा है। आज देश को तलाश है पूज्य करपात्री जी महाराज, पूज्य प्रभूदत्त जी ब्रह्मचारी जैसे महापुरूषों की, जो गोचर एवं गो वंश रक्षा हेतु आमजन में नवीन ऊर्जा का संचार करें।

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद के समझौते पर बहस

केन्द्र सरकार के अधीन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) कृषि क्षेत्र में सर्वोच्च सार्वजनिक कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रचार–प्रसार की संस्था है। इसके अंतर्गत विश्वभर में सर्वाधिक कृषि वैज्ञानिक एवं मार्गदर्शन के लिए देशभर में 731 कृषि विज्ञान केन्द्र (केवीके) का मजबूत नेटवर्क कार्यरत है। इतना सक्षम होते हुए भी वर्ष 2023 से निरंतर निजी कम्पनियों जैसे– अमेजन, धानुका, बायर, कोरोमण्डल आदि से कृषि शोध, किसानों को कृषि संबंधी सलाह, मार्गदर्शन तकनीकी जानकारी एवं ताजे कृषि उत्पाद का व्यापार जैसे विषयों के लिए समझौता करता आ रहा है।

देशभर के किसानों, किसान संगठनों, कृषि उत्पादक संगठन आदि समूह की उपेक्षा करके विदेशी एमएनसी को प्राथमिकता देकर समझौते करना क्या देश हित में है? इनके चयन के लिए क्या नियम, मापदण्ड अपनाये? क्या कार्बन क्रेडिट बाजारों के बारे में कोई सार्वजनिक बहस हुई? जबकि हमारे संविधान अनुसार कृषि एक राज्य का विषय है। क्या विचार–विमर्श वाली लोकतांत्रिक प्रक्रिया के बाद सार्वजनिक नीति बनाई गई? आईसीएआर इन्हें क्यों सुविधाजनक बना रहा है? और इसके पास कौन सा विशिष्ट अधिदेश है? क्या समझौते के दस्तावेज सार्वजनिक किये गये हैं? आईसीएआर बायर कंपनी से क्या सीखेगा? जो सार्वजनिक प्रतिष्ठित संस्था के अनुभवी वैज्ञानिक खुद विकसित नहीं कर सकते? किस्मों और अन्य तकनीकों सहित जो कुछ भी विकसित किया जाता है उस पर आाईपीआर की क्या व्यवस्था है? क्या आईसीएआर का मानना है कि बायर कंपनी किसानों को ऐसी सलााह देगाा जो उसके अपने व्यावसायिक लक्ष्यों काो आागे नहीं बढ़ायेगी और ऐसी सलाह सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार विभागों के साथ–साथ देश में आाईसीएआर के केवीके द्वारा नहीं दी जा सकती है यह स्पष्ट नहीं है कि इन समझौतों से किस समस्या को हल करने का प्रयास हो रहा है?

यह समझ से परे है कि अभी जुलाई, 2024 को संस्थान के द्वारा 100 दिन में 100 किस्में देने की बात कही, केन्द्र सरकार द्वारा शोध एवं नवनीत विकसित करने के लिए 1 लाख करोड़ रूपये के वित्त का प्रावधान है। इसके अतिरिक्त अभी भी देशभर में सार्वजनिक कृषि संस्थान एवं विश्वविद्यालय के बीज, पौधे व अन्य उत्पाद को खरीदने के लिए प्राथमिकता रहती है जो प्रशंसनीय एवं प्रोत्साहित दिखती है। लेकिन, देश के किसान को जानने का हक है कि ऐसी क्षमता वाले संस्थान की क्या मजबूरी हुई कि कुछ चुनिंदा विदेशी कंपनियों से ही समझौता करना पड़ा।

यह हमारे लिए स्पष्ट है कि जो संस्थाऐं हमाारे कृषि क्षेत्र में आर्थिक और पर्यावरणीय संकट पैदा करने के लिए जिम्मेवार है, उन्हें तथाकथित समाधान के लिए आईसीएआर द्वारा भागीदारी दी जा रही है जबकि इन संस्थाओं की दिलचस्पी केवल अपने मुनाफे में है, न कि शाश्वतता में। दूसरी ओर, आईसीएआर जैसी सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाऐं अंततः भारत की जनता के प्रति जवाबदेह है, क्योंकि वे करदाताओं के पैसे से चलती है। आईसीएआर जैसी प्रतिष्ठित संस्था कृषि मंत्रालय द्वारा तय मानदण्डों को ताक पर रखकर निर्णय लेती रही है, लेकिन केन्द्र सरकार का कृषि मंत्रालय इससे अनभिज्ञ क्यों है? भारतीय किसान संघ आईसीएआर से अपेक्षा करता है कि किसानों के लिए इस प्रकार के सभी नीतिगत निर्णय लेने से पहले देश के सभी कृषि हित धारकों एवं किसान संगठनों से चर्चा करके सहमति से अंतिम निर्णय लेकर किसान व राष्ट्र हित में नीति निर्धारित करें।

ऐसा है किसान

बहुत बुरी हालत है, ईश्वर धरती के भगवान की।
टूटी माला जैसे बिखरी – किस्मत आज किसान की।।

ऐसी आँधी चली की घर का तिनका–तिनका बिखर गया।
आखिर धरती माँ से उसका प्यारा बेटा बिछुड़ गया।।

अखबारों में रद्दी बनकर बिकी कथा बलिदान की।
टूटी माला जैसे बिखरी – किस्मत आज किसान की।।

इतना सूद चुकाया, उसने कि अपनी सुध भूल गया।
सावन के मौसम में झूला लगा के फाँसी झूल गया।।

अमूवा की डाली पर देखा लाश टंकी ईमान की।
टूटी माला जैसे बिखरी – किस्मत आज किसान की।।

एक अरब पच्चीस करोड़ की भूख जो रोज मिटाता है।
कह पाता नहीं वो किसी से भूखा ही सो जाता है।।

फिर सीने में गोली खाता सरकारी सम्मान की।
टूटी माला जैसे बिखरी – किस्मत आज किसान की।।

देखा कलेजा फट जाता है, ऑखों में आंसू बहते।
ऐसा न हो कलम रो पड़े सच्चाई कहते–कहते।।

बाली तक गिरवी रखी है, बेटी के अभिमान की।
टूटी माला जैसे बिखरी – किस्मत आज किसान की।।

चीख पड़ी खेतों की माटी, तड़प उठी गम से धरती।
बिना कफन के पगडण्डी से गुजरी जब उसकी अर्थी।।

आज वही विदा हो गया जैसे चिन्ता थी कन्या दान की।
टूटी माला जैसे बिखरी – किस्मत आज किसान की।।

मैं किसानों के बलिदानों के गीत सुनाया करता हूँ।
बाहरों की बस्ती से मैं फरियाद लगाया करता हूँ।।

भोला तो कवि धर्म निभाता, आगे मर्जी राम की।
टूटी माला जैसे बिखरी – किस्मत आज किसान की।।

– सुदीप भोला

न गाडी, न बैंक बैंलेन्स –ऐसे थे महामहिम डॉ. अब्दुल कलाम

भारत के राष्ट्रपति रहे डॉ. अब्दुल कलाम साहब के राष्ट्रपति काल के दौरान उनके सचिव रहे आई. ए. एस. अधिकारी श्री पी. एम. नायर ने कलाम प्रभाव नाम की पुस्तक लिखी है। इसमें श्री नैयर ने डॉ. कलाम साहब के जीवन प्रसंगों, संस्मरणों एवं समाज को दिशा देने वाले उनके चिन्तन पर लिखा है।

डॉ. कलाम साहब उच्च कोटि के देशभक्त थे। राष्ट्रपति कार्यकाल के दौरान जब भी वे विदेशी दौरों पर गये, तो परम्परानुसार उन्हें वहॉ के राष्ट्राध्यक्षों व अन्य संगठनों से मिलने वाले महंगे उपहारों को वे घर नहीं ले गये। डॉ. कलाम साहब के स्पष्ट निर्देशानुसार उन सभी कीमती उपहारों को राष्ट्रीय अभिलेखागार में जमा करवाया गया, वे उन्हें राष्ट्रीय धरोहर मानते थे, निजी नहीं। राष्ट्रपति भवन से विदा होते समय प्राप्त उपहारो में से एक पेन्सिल भी नहीं ली, यह थी उनकी राष्ट्र के प्रति समर्पण भावना।

राष्ट्रपति काल के दौरान उन्होंने 50 रिश्तेदारों को राष्ट्रपति भवन में आमन्त्रित किया, वे सभी राष्ट्रपति भवन में ठहरे। उन्होंने शहर में घूमने के लिये निजी बस का इन्तजाम अपने निजी पैसों से किया, कोई सरकारी गाडी इस्तेमाल नहीं की गयी। ठहरने, खाने–पीने का सारा इन्तजाम स्वयं महामहिम जी ने 2 लाख का भुगतान करके दिया। देश का पैसा अपव्यय (खर्च) नहीं किया।

डॉ. कलाम साहब बेहद सादगी पसन्द व प्रचार–प्रसार से कोसों दूर रहे। उनका छोटा भाई छाते की मरम्मत का काम करता है, उन्होंने उसे अपने धन्धे को ही लगन से करने को प्रेरित किया। ऐसे महामहिम डॉ. कलाम साहब द्वारा छोड़ी गयी सम्पत्ती देश के आमजन के लिये प्रेरणा–स्त्रोत है, एक प्रभावी सीख है, राजनीतिक क्षेत्र के नेताओं के लिये।

उस महान व्यतित्व के धनी के पास मे सम्पति थी

1. 6 पेन्ट (2 D.R.D.O.)
2. 6 शर्ट (2 D.R.D.O. वर्दी)
3. 3 सूट (1 पश्चिमी, 2 भारतीय)
4. सम्मान– पदमश्री, पदम भूषण, भारत रत्न
5. ,, 2500 पुस्तकें,
6. एक ई–मेल आई.डी.
7. 16 डायरेक्टेड
8. एक फ्लेट –जिसे उन्होंने दान कर दिया।

उनके पास टी. वी., ए.सी. कार, आभूषण, शेयर व बैंक बैलेन्स नहीं था।

चरागाह में विकास कैसे

देशी गो वंश के पालन में कमी का व खेती पर्यावरण नुकसान का बडा कारण चरागाह कमजोर होना है। इसका अनेक प्रकार से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष असर जन स्वास्थ्य में गिरावट के रूप में हुआ है। मोटेतौर पर–

1. चरागाह न होने से जहरीला कचरा व चारा गाय को खिलाने से दूध, घी, बोबर, गो मूत्र व गो स्वास्थ्य में भारी गिरावट आयी है, जिसका असर मानव सहित सभी प्राणी वर्ग पर हुआ है।

2. चरागाह ना होने से अनेक स्वास्थ्य रक्षाक वन ओषधियों का बीज खत्म होने के कगार पर पहुंच रहा है।

3 चरागाह में स्थायी पेड–पौधों का जंगल भी होता है, जिससे पर्यावरण सन्तुलन भी बना रहता है। करोड़ों पेड चरागाह में सहज़ता से सम्भव है।

4. चरागाह रोजगार का भी बडा मजबूत दीर्घकालीन आधार होता है, परोक्ष आर्थिक सम्बल मिलता है।

पूर्व में गोचर ओरण देव बणी, पायतान आदि अनेक प्रकार की समाज नियन्त्रित भूमियों के साथ–साथ खेतों का एक हिस्सा भी चरागाह के रूप में काम में लिया जाता था। चरागाह विकास गाय, खेती एवं पर्यावरण संरक्षण की मूल समस्याओं का स्थायी समाधान है।

5. जैव सन्तुलन पर विचार कर वानपस्तिक विविधता को अपनाना व प्रकृति के सूक्ष्म चक्रों को समग्रता से समझकर ही चरागाह विकास प्रक्रिया अपनाना।

6. चरागाह विकास व सुरक्षा में स्थानीय लाभान्वित समाज को दायित्व बोध कराना एवं इसके संरक्षण– संधारण में सक्रिय सहभागिता करवाना।

यह वर्तमान समय का सबसे अधिक पुण्य का धार्मिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय महत्व का कार्य है। समाज इसमें सहभागी बने।

पर्यावरण प्रेमी –गुरूजी

प्रचार–प्रसार से कोसों दूर, न मान–अपमान की चिन्ता, बस एक ही धुन, वृक्षारोपण अभियान का ध्येय लेकर पिछले तीस वर्ष से टीकेल पुरोहितान निवासी श्री दीप चन्द कांकर पर्यावरण संरक्षण के मार्ग पर अनवरत चल रहे है।

उनके द्वारा लगाये गये बड़–पीपल, नीम आदि के करीब 3000 वृक्ष लगाने से क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के दुःपरिणामों, प्रभावों से बचने के साथ स्वास्थ्य पर भी अनुकूल असर दिखाई दे रहा है। सरकारी अध्यापक कांकर जी का विद्यालय समय के उपरान्त गड्डे खोदना, पौधे लगाना, उन्हें पानी पिलाना दिनचर्या का अंग बन गया है।

उनके अनुसार प्रकृति प्रेम की उनकी प्रथम पाठशाला स्वयंसेवी संगठन सिकोईडिकोन है, 1992 में जयसिंहपुरा ग्राम पंचायत कुम्हारियावास तहसील चाकसू में अध्यापक पद पर पद स्थापन के दौरान सिकोईडिकोन संस्था द्वारा क्षेत्र में जनसहभागिता आधारित वृक्षारोपण कार्यक्रम (प्लान्टेशन) शुरू किया गया, इस अभियान में कांकरजी को सक्रिय रूप से जुड़ने का अवसर मिला। आपने भी जयसिंहपुरा में करीब 50 पौधे नीम एवं पीपल के लगाये व सार–सम्भाल की।

फिर तो वापिस गॉव के पास पदस्थापन होने पर इन्होंने क्षेत्र में वृक्षारोपण करने का बीड़ा उठाया व हाथ से फावड़ा एवं गेंती उठा ली। पद का कोई गुमान नहीं, पीपल, बड़, नीम के वृक्ष लगाना इनकी प्राथमिकता में रहा, सड़क किनारे, गोचर, भूमि, धार्मिक स्थल, विद्यालय मैदान में पौधे लगाना जारी रखा। इनके पर्यावरण संरक्षण के कार्य को निष्काम कर्मयोगी की तरह करते देख, इनके आस–पास के गांवों के युवा इनके पर्यावरण परिवार से जुड़ते गये।

इनमें ग्राम झाग से नरेश चौपड़ा मण्डोर से शंकर मीणा, टीकेल नरूकान से अब्दुल रज्जाक, शंकरपुरा से श्याम सुन्दर पारीक आदि भी इनके वृक्षारोपण अभियान में कदम से कदम मिलाकर साथ चलने लगे। क्षेत्र के 25 ग्रामों में करीब 3100 पौधे वृक्ष बन जैव विविधता समृद्ध होने की गवाही दे रहे हैं। साथ ही इनकी प्रकृति की सतत् साधना से वृक्षों का धार्मिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय महत्व के साथ आमजन में वृक्षारोपण की सीख मिली है एवं जागरूकता बढ़ रही है।

नवाचार करते हुये वर्तमान में आप सभी ने वृक्षारोपण के साथ टीकेल पुरोहितान में वाटिका में चन्दन के 80 पौधे लगाये है, व इनके लिये पानी, जैविक खाद व सभी स्तर पर सार–सम्भाल की जा रही है। कांकरजी का मानना है चन्दन का आस–पास ग्रामों के धार्मिक स्थलों पर निःशुल्क वितरण किया जायेगा। कांकर सा. बताते है, हमारी इसी श्रृंखला में हम सफ़र पचाला ग्राम के गंगा सिंहजी पचाला भी वर्तमान में दशकों से प्रकृति की सतत् साधना (वृक्षारोपण अभियान) में निःस्वार्थ भाव से लगे हैं।

तो चकवाड़ा ग्राम के रंगलाल जी सूतल्या (अध्यापक) भी ग्राम चकवाड़ा में तालाब पाल विद्यालयों में सैंकड़ों पौधे लगा चिर–स्मरणीय बने। आज वो हमारे बीच में नहीं, पर उनकी कमी हमें ख़लती रहेगी।

जब वृद्धजनों का आत्म सम्मान बढ़ा

1 अक्टूबर, 2024 को सिकोईडिकोन संस्था द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर लगभग 30 ग्रामों के करीब 120 वृद्धजनों का सम्मान कर एक नवाचार किया। एक प्रेरणादायी, गरिमामयी कार्य किया।

कार्यक्रम में आपसी संवाद व अनुभवों के आधार पर वृद्धजनों से जुड़ी विभिन्न समस्याओं, वृद्धजनों को समाज व परिवार में उचित सम्मान मिले, इस हेतु युवाओं को दायित्व बोध करवाकर सकारात्मक वातावरण निर्माण कर युवाओं को वृद्धजनों के प्रति संवेदनशील व जवाबदेह बनाने पर खुली एवं सार्थक चर्चा हुयी।

आपसी संवाद से निकलकर आया कि बुजुर्ग हमारे समाज की अनमोल धरोहर है, उनके उचित सम्मान हेतु सरकार भी सामाजिक सुरक्षा योजना, पेंशन योजना चला रही है। संयुक्त परिवार टूटने से ही युवा एकाकीपन से बिना भय के नशे की लत में डूब रहा है। बुजुर्ग प्रकृति पूजक रहे हैं, जिससे जल, जमीन, जंगल, पहाड़, नदियां, तालाब संरक्षित रहे हैं। युवा उनसे प्रकृति प्यार के बारे में सीखे तो आज जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायेगा।

कार्यक्रम में परम्परागत साफ़ा, धोती–कुर्ता पहने बुजुर्गों की गरिमामयी उपस्थिति ने स्पष्ट दिशा दी कि अपनी विरासत एवं संस्कृति बचाकर ही हम देश को वैभव के शिखर तक ले जा पायेंगे। अब उनके आत्म– सम्मान पर ठेस न पहुंचे। सिकोईडिकोन, किसान सेवा समिति एवं युवा मण्डल के सदस्यों ने वृद्धजनों का माला पहना एवं एक–एक स्टिक देकर सम्मानित किया।

नाड़ी खुदाई–पश्चिमी राजस्थान की एक महत्ती आवश्यकता

पश्चिम राजस्थान की पूरी दुनियां में अलग पहचान है, यहां का भू–भाग अल्पवर्षा, वनस्पति की कमी, रेतीले टीलों के लिये जाना जाता है। पानी का अभाव यहां की प्रमुख समस्याओं में से एक है। वर्षा जल संरक्षण ही यहॉ का जल का प्रमुख स्त्रोत रहा है। नाड़ी खुदाई (छोटे तालाब) एवं टॉकों में वर्षा जल संरक्षण यहॉ कि परम्परा रही है जो कि एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के पीने का पानी, मवेशियों के लिये पीने का पानी तथा अन्य घरेलू कार्यों के लिये लोग नाड़ी में संचित वर्षा जल पर ही निर्भर रहते है। इसके साथ ही जंगल में निवास करने वाले असंख्य जीव–जन्तु भी पानी के लिये इन नाड़ियों पर ही निर्भर रहते हैं।

संस्था सिकोईडिकोन विगत 18 वर्षों से पश्चिमी राजस्थान के जैसलमेर जिले में सुज़लॉन फाउण्डेशन के सहयोग से विकास कार्य हेतु जनसहभागिता के माध्यम से कार्य कर रही है। इसके तहत् शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला विकास आजीविका संवर्धन से जुड़े हुए कार्य प्रमुखता से किये जा रहे हैं। इसमें से जल संरक्षण से जुड़े हुए कार्य प्रमुख कार्यों में से एक है नाड़ी खुदाई। गहरीकरण कार्य यहॉ के लोगों की सबसे प्रारम्भिक आवश्यकता है क्योंकि यही एक जल का कारगर स्त्रोत है।

विगत 2 वर्षो में संस्था सिकोईडिकोन द्वारा सुजलॉन फाउण्डेशन के सहयोग से जैसलमेर जिले के भीकसर, मोलिसर, भू, हाग, सेलत, बडोडा गॉव, छोड़, मोकुल, सेरावा, मदा तथा जोधपुर जिले के केतु कला, बेगारिया, रातइकला, नॉदसर, रतकुड़िया, भोपालगढ़, कुई इन्छा तथा बासनी डावरा गॉवों में इस प्रकार कुल 18 नाड़ियों के गहरीकरण का कार्य करवाया गया है। कार्य की देखरेख की जिम्मेदारी स्थानीय ग्राम विकास समिति द्वारा किया गया एवं बहुत ही गुणवत्तापूर्ण कार्य करवाया गया।

खुदाई कार्य से अधिक वर्षा जल का संरक्षण होने से इन नाड़ियो में लगभग 2 माह कार्य हेतु अतिरिक्त पानी संचित हो पाता है, जिससे लोगों की पेयजल, पशुओं के लिये पीने का पानी तथा अन्य घरेलू कार्य हेतु गॉव के बाहर से महॅगी दर पर पानी का टेंकर मंगवाने की निर्भरता कम हुई है। जन समुदाय इन नाड़ियों की स्वच्छता तथा देखरेख अपने स्तर पर करता है, जो कि एक अनुकरणीय उदाहरण है।

केस स्टडी

''महिलाओं की सुरक्षा के लिए उठाया कदम''

नाम—राधा देवी

गांव—कृपालपुरा

पद—किसान सेवा समिति कार्यकारिणी सदस्य

वर्ग—अनुसूचित जाति

आयु—42 वर्ष

व्यक्तिगत विवरण—ग्राम पंचायत चनानी के गांव कृपालपुरा से किसान सेवा समिति कार्यकारिणी सदस्य राधा देवी का संस्था से जुडाव लगभग 22 वर्षो से है इनका कहना है कि इस दौरान इन्हें विभिन्न गतिविधियों में शामिल होने का अवसर मिला जिससे उनका कई विषयों पर क्षमतावर्द्धन हुआ है तथा नेतृत्व क्षमता विकसित हुई, जिससे वह स्वयं के बच्चे के साथ ही गांव की बालिकाओं को गुणात्मक शिक्षा दिलवा रही है। पात्र लोगों का सरकारी योजनाओं से जुडाव करवा कर गांव के विकास के कार्यो में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है तथा राजीविका से जुड़कर महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण का कार्य भी कर रही है।

राधा देवी संस्था द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों व शैक्षणिक भ्रमणों में सक्रिय भागीदारी लेती है और इनसे सीख लेकर स्वयं के स्तर पर उपयोग भी लेती है। ये बताती है कि जैविक कृषि पर प्रशिक्षण से सीख लेकर प्रतिवर्ष 1.5 बीघा भूमि में ककड़ी का उत्पादन जैविक पद्धति से किया, जिससे गॉव में अन्य किसानों की तुलना में आर्थिक लाभ हुआ। अब गॉव के अन्य परिवार भी जैविक पद्धति से सब्जियों का उत्पादन कर रहे हैं, जिससे उनके परिवार की आजीविका सुरक्षित हुई है।

राधा देवी बताती है कि एक दिन गांव की महिलाओं ने मुझे बताया कि गांव से 1 कि. मी. दूर खेतों में आने जाने वाले रास्ते पर एक अनजान व्यक्ति ने अवैध रूप से शराब की दुकान खोल ली है, जिससे कई लोग, विशेषकर युवा इसका सेवन कर रहे हैं। महिलाओं व बालिकाओं को खेत में कार्य करने, पशु चराने व आते—जाते समय अनहोनी का डर रहता है। इस पर कार्यवाही हेतु सरपंच से बात कर समस्या सुनायी। सरपंच ने मुझसे कहा कि मेरे कई बार प्रयास करने पर भी वह दुकान नहीं हटा रहा है। अतः हमें इस पर कार्यवाही हेतु आपकी मदद चहिए।

उस आदमी को सबक सिखाने के लिए मैने, मेरे पति, 2 ग्राम विकास समिति सदस्य और सरपंच पत्नी ने मिलकर योज़ना बनायी और दोपहर के तीन बजे हमारे साथ के दोनों पुरूषों को कुछ दूरी पर रोक कर मैं और दूसरी महिला शराब की थड़ी पर चले गए, उस समय शराब विक्रेता नॉन वेज़ बना रहा था मैंने जाकर उससे मोलभाव करवाया तो दूकानदार मुस्कराते हुए बोला क्यों आप क्यों आए हो, मैंने कहा हमें भी ये चीजें चाहिए, जो आप बेच रहे हो। आपके द्वारा यहां शराब व नॉन वेज बेचने से हमारे गांव के लोग इसके लत की ओर बढ़ रहे हैं। युवा बच्चों के नशा करने से चोरी व घरेलू हिंसा सम्बन्धित मामले बढेंगे। इसलिए हम आपको को यहां ये चीजें बेचने नहीं देंगे।

इस पर शराब विक्रेता आक्रोश से मेरी ओर बढ़ा और बोला कि मैंने कमाई के लिए यहां दुकान डाली है। ये दुकान यहां से नहीं हटेगी, इस जगह का किराया दिया है तब मैंने उसकी गिरबान पकड़कर उससे कहा कि किसकी सहमति ली अगर तेरे पास लाइसेन्स या कोई सरकारी कागज है तो दिखा, तब उसने कहा कि वो तो नहीं है मेरे पास, तब मैंने धमकी दी कि हम महिलाएं मिलकर तुझे यहां दुकान नहीं चलाने देंगे या तो तू इसे यहां से हटा अन्यथा इस पर आग लगा देंगे। उसके बाद उसका आक्रोश

कम हुआ व हाथ जोड़कर बोला कि मैं यहां से चला जाउंगा, लेकिन मेरी दुकान को नुकसान मत पहुंचाओ, उसी वक्त उसने वहां से अपनी दुकान हटा ली। अब गांव की सभी महिलाएं निडर होकर अपने खेतों पर आ–जा रही है और मुझे इस सराहनीय कार्य के लिए धन्यवाद देती है।

ग्राम पंचायत के माध्यम से कृपालपुरा आश्रम पर नया सार्वजनिक हैण्ड पम्प के थला निर्माण में कमजोर मेटेरियल ठेकेदार के माध्यम से लगाया गया, जिससे हैण्डपम्प चालू होने के तुरन्त बाद हैण्डपम्प ज़मीन के अन्दर चला गया। इस पर इनके द्वारा तुरन्त ग्राम विकास अधिकारी व सरपंच को फोन पर शिकायत की और कहा कि इसे तुरन्त ठीक करवाए नहीं तो ब्लॉक स्तर पर इसेकी शिकायत करेगी ।इस पर पंचायत स्तर के जिम्मेदार अधिकारीयों ने तुरन्त प्रभाव से हैण्डपम्प ठीक करवाया ।

सहरिया क्षेत्र के मुद्दों पर मुख्य सचिव जी से संवाद

किसान सेवा समिति महासंघ के प्रतिनिधि मण्डल ने राजस्थान के मुख्य सचिव महोदय से मिलकर शाहबाद (जिला बारां) क्षेत्र की समस्याओं के समाधान का आग्रह किया।

1. वन भूमि पर अवैध अतिक्रमण –शाहबाद क्षेत्र में सहरिया एवं भील समुदाय पशुधन एवं वन उत्पादों के सहारे अपना जीवनयापन करते हैं, परन्तु शाहबाद (बारां) क्षेत्र की ग्राम पंचायत बीची, कस्बा नोनेरा, खाण्डा सहरोल, वमन गवां, बीलखेड़ा आदि के चरागाह व वन भूमि पर दबंगों द्वारा अवैध अतिक्रमण कर खेती करने से सहरिया व भील समुदाय को खाद्य सुरक्षा व रोजगार नहीं मिलने से पलायन करना मज़बूरी हो गया है, जिसे आमज़न की शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं में प्रतिकूल असर हो रहा है, अतः अतिक्रमण हटाये जायें।

2. यातायात सुविधा– शाहबाद ब्लॉक में समुचित यातायात सुविधा न होने से विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिये वंचित रहना पड़ रहा है; अतः (1) शाहबाद से कस्बा थाना, सन्दोकड़ा, (2) शाहबाद से देवरी वमनगंवा, कस्बा नोनेरा, (3) शाहबाद से बैंहटा, कराहल (4) शाहबाद से गदरेटा, ख़टका, सेमली फ़ाटक, किराड़ा, पहाड़ी (5) शाहबाद से मूंगावली, मझारी, कस्बा नोनेरा तक परिवहन व्यवस्था प्रारम्भ करने का आग्रह किया गया।

3. सहरिया समुदाय वर्षों से अपने गॉवों में कृषि भूमि पर काश्त करता रहा है। दबंग लोगों ने सहरियाओं को वहॉ से डरा–धमका कर भगा दिया एवं स्वयं उस भूमियों पर कब्जा कर खेती करने लगे।

KISAN SEWA SAMITI
(MAHASANGH)
CECOEDECON Development Centre
Mob. : 9828126321,9799748363
E-mail : kssmrajasthan@gmail.com

दिनांक: 30.07.2024

सेवामें,

श्रीमान मुख्य सचिव महोदय,
राजस्थान सरकार
शासन सचिवालय, जयपुर।

विषय– शाहबाद (बारां) में चरागाह एवं वन भूमि से अतिक्रमण हटवाने के क्रम में।

महोदय/ महोदया,

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है उक्त अतिक्रमण को हटवाकर गरीब समुदाय को राहत दिलवाया जाना सुनिश्चित करें।

सचिव

किसान सेवा समिति महासंघ

City Contact : SWARAJ Campus, F-159-160, Sitapura Industrial Area, Jaipur-302022 RAJASTHAN

इस पर सहरिया प्रतिनिधियों ने मुख्य सचिव जी को विस्तृत तथ्यात्मक जानकारी दी। प्रतिनिधि मण्डल में अध्यक्ष श्री बद्री नारायण जाट, उपाध्यक्ष कैलाश गुर्जर, मथुरा लाल सहरिया, भोगी लाल सहरिया, हरिनारायण सूत्रकार आदि शामिल थे।

और अतिक्रमण मुक्त हुई गोचर भूमि

ग्राम पंचायत प्रशासन एवं ग्राम विकास समिति के व्यवहारिक एवं सार्थक प्रयासों से ग्राम सरस्वतीपुरा (दौसरा) में 247 बीघा चरागाह भूमि अतिक्रमण मुक्त होने से पशुपालकों में आत्म निर्भरता बढ़ी है।

ग्राम विकास समिति के अध्यक्ष हनुमान प्रसाद जाट ने अपने सदस्यों के साथ ग्राम पंचायत से समन्वय के साथ ग्राम सरस्वतीपुरा में गोचर अतिक्रमण मुक्त करवाने हेतु एस.डी.एम. साहब, माधोराजपुरा से निवेदन किया कि यह चरागाह भूमि मवेशियों के चरने हेतु खाली हो।

एस.डी.एम. साहब ने इस संवेदनशील मुद्दे को गम्भीरता से लेकर ग्राम पंचायत दौसरा एवं आमजन के सहयोग से 247 बीघा भूमि अतिक्रमण मुक्त करवा अन्य क्षेत्र के लिये सीख व सन्देश दिया कि सभी ग्राम– पंचायतों को चरागाह भूमि अतिक्रमण मुक्त हेतु आगे आये। यह आमजन की आजीविका, खाद्य सुरक्षा के साथ गोवंश के संरक्षण हेतु प्रभावी पहल होगी।

किसान सेवा समिति एवं सिकोईडिकोन संस्था भी स्वप्रेरणा से चरागाह मुक्त हेतु आमजन में अभियान चलाती रही है। ग्राम पंचायत व ग्राम विकास समिति के सदस्यों के व्यवहारिक व सार्थक प्रयासों से सरस्वतीपुरा, परवण, मण्डावरा ग्रामों में करीब 800 बीघा भूमि से अतिक्रमण हटाया गया।

एक बीघा श्मशान भूमि से भी हटाया अतिक्रमण

8 घंटे तक चली 5 जेसीबी मशीनें
247 बीघा भूमि अतिक्रमण मुक्त

पत्रिका
लाइव रिपोर्ट

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

माधोराजपुरा. उपखंड की दौसरा ग्राम पंचायत के सरस्वतीपुरा गांव के ग्रामीणों को अब परेशान नहीं होना पड़ेगा। बुधवार को माधोराजपुरा उपखंड अधिकारी राजेश कुमार मीणा की अगुवाई में पुलिस जाप्ते के साथ करीब 8 घंटे चले ऑपरेशन में गांव की 247 बीघा चारागाह भूमि को पूरी तरह से अतिक्रमण मुक्त कर दिया गया। इससे वर्षों पुरानी आस पूरी होने पर सभी ग्रामीणों के चेहरे खुशी से खिल उठे।

वहीं कुछ अतिक्रमियों ने हल्का विरोध किया लेकिन मौके पर मौजूद पुलिस ने अतिक्रमियों को खदेड़ दिया। चरागाह भूमि को अतिक्रमण मुक्त करने में पांच जेसीबी लगातार चलती रही। संपूर्ण भूमि के अतिक्रमण मुक्त होने पर मौके पर ही मेडबंदी कराई गई तथा ग्राम पंचायत प्रशासन को सुपुर्द कर भविष्य में सुरक्षा की जिम्मेदारी तय की गई।

ये अधिकारी रहे मौजूद : ऑपरेशन के दौरान उपखंड अधिकारी के साथ माधोराजपुरा तहसीलदार तनु शर्मा, अतिरिक्त विकास अधिकारी बृजेंद्र सिंह धाकड़, थानाधिकारी देवेंद्र चावला, उपतहसीलदार नानगराम मीणा, भू-अभिलेख निरीक्षक पवन कुमार शर्मा, डाबिच पटवारी प्रभाती लाल मीणा, सेहदरिया हल्का पटवारी शेफाली सेनी, गोपालपुरा पटवारी मुरारी लाल जांगिड़, भांकरोटा पटवारी सत्यनारायण चौधरी, सरपंच गट्टूली देवी, ग्राम विकास अधिकारी राजेंद्र प्रसाद शर्मा सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण भी मौके पर उपस्थित रहे। गौरतलब है कि माधोराजपुरा तहसीलदार तनु शर्मा ने दो दिन पूर्व ही सभी 37 अतिक्रमियों को स्वेच्छा से अतिक्रमण हटाने के लिए दो दिन का अल्टीमेटम भी दिया था।(निसं.)

शमशान भूमि मुक्त होने से मिली राहत

जानकारी के मुताबिक गांव की एक बीघा श्मशान भूमि पर भी एक अतिक्रमी लंबे समय से काबिज था। इससे ग्रामीणों को शवों के अंतिम संस्कार करने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था। शवों का अंतिम संस्कार अन्यत्र किया जा रहा था। इससे ग्रामीण काफी व्यथित थे। जैसे ही अतिक्रमण पर पीला पंजा गरजा और श्मशान को अतिक्रमण मुक्त किया गया तो गांव वालों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा।

उपखण्ड अधिकारी की मौजूदगी में अतिक्रमण ध्वस्त करती जेसीबी व कार्रवाई के दौरान उमड़ी भीड़।

खबर को विस्तार से पढ़ें patrika.com

चारागाह में वृक्षारोपण

ग्राम पंचायत आकोड़िया में पंचायत के पास वाले चारागाह में संस्था द्वारा वर्ष 2022–23 में वृक्षारोपण का कार्य करवाया, जिसमें ग्राम पंचायत का पूरा सहयोग रहा।

संस्था द्वारा छायादार व फलदार पौधे 500 उपलब्ध करवाए एवं फिनिसिंग हेतु गड्डू एवं तार उपलब्ध करवाए, इसमें श्रमदान का कार्य ग्राम पंचायत ने किया, जिसमें गड्डे खुदवाना, पौधों की रोपाई एवं तारबंदी करवाना और सिंचाई का कार्य करवाया गया। इस कार्य में ग्राम पंचायत का अच्छा सहयोग रहा।

वर्तमान में सभी पौधे 7–8 फीट की हाईट में है। चिकू में फल लग रहे है और पूरा चारागाह क्षेत्र एक बगीचे की तरह विकसित हुआ है। इसमें नरेगा श्रमिकों द्वारा सिंचाई करवाई जा रही है। वृक्षारोपण से ग्रामीण एवं जनप्रतिनिधि खुश है और अन्य गांवों से आने वाले लोगों के लिए उदाहरण बन गया है।

जैविक कृषि की ओर बढते कदम

इन्टीग्रेटेड फार्मिंग मॉडल
नाम– मीना कुमारी माली
पति का नाम– कैलाश चन्द माली
गांव– चांदसेन, तहसील–मालपुरा, जिला–टोंक, राजस्थान।

मीना कुमारी माली गांव की एक गरीब परिवार की महिला है। गांव की दूरी ब्लॉक से 13 किलोमीटर है जो मालपुरा से जयपुर – मुख्य सड़क से उत्तर की ओर चांदसेन गांव है।

मीना कुमारी माली एक साक्षर महिला किसान है, जिसकी उम्र 33 वर्ष है, परिवार में पति, पत्नी और एक लड़की है। मीना देवी का ग्राम विकास समिति बैठक में इन्टीग्रेटेड फार्मिंग मॉडल गतिविधि के तहत् चयन कर उन्नत कृषि तकनीकि अपनाने हेतु प्रशिक्षण दिलवाया गया, जिसमें इन्होंने जीवामृत बनाने का तरीका सीखकर फसलों व सब्जियों में रासायनिक दवाओं का उपयोग कम कर जैविक दवाओं का प्रयोग करने लगे जिससे इन्हें अपनी फसलों में होने वाले रोगों से निजात पायी और बाजार से महंगी दवाईयों में खर्च होने वाली मोटी रकम को बचा पायी। मीना कुमारी के पास मात्र 3 बीघा जमीन है, जिसमें एक बीघा में पशुओं के लिए चारा, एक बीघा में खाद्यान्न फसलें बोई एवं शेष एक बीघा नगदी फसलों में सब्जियां बोई गई। संस्था द्वारा इन्टीग्रेटेड फार्मिंग मॉडल गतिविधि के तहत् माह अक्टूबर, 2024 में मटर, गोभी व प्याज़ का बीज़ दिया गया, जिनकी अच्छी–सार सम्भाल की गई। समय – समय पर निराई–गुडाई, पानी पिलाना एवं दवाई आदि का छिड़काव किया गया, जिससे सब्जियों में अच्छी ग्रोथ हुई। मटर व गोभी की सब्ज़ी को जनवरी और फरवरी माह में मीना कुमारी द्वारा मालपुरा मण्डी में ले जाकर बेचने लगे, जिससे उन्हें 72000 रूपये की आमदनी प्राप्त हुई।

इस पकार से नगदी फसल बोने के साथ–साथ मीना कुमारी पशुपालन का कार्य भी करने लगी, जिससे पशुओं को हरा चारा खिलाने से दूध में भी वृद्धि हुई, जिसको डेयरी में बेचने लगी। इस प्रकार से मीना कुमारी की पशुपालन के साथ – साथ सब्जियां बाने से आमदनी प्राप्त हुई, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ और सामाजिक स्तर पर भी सम्मान बढ़ा।

और यातायात सुलभ हुआ

कल्याण किसान सेवा समिति मालपुरा के प्रतिनिधिमण्डल ने केबिनेट मन्त्री श्री कन्हैया लाल चौधरी से भेंट कर मालपुरा क्षेत्र में यातायात सुविधाओं के अभाव में आम–जन एवं विद्यार्थी वर्ग को हो रही विकट समस्या से अवगत करवाया व बताया कि यातायात सुविधा के अभाव में बालक–बालिकाऐं ड्रॉप आऊट को मज़बूर है व रोगग्रस्त लोगों को स्वास्थ्य सुविधाओं हेतु अस्पताल पहुंचना मुश्किल होने से झोलाछाप क्लिनिकों का सहरा लेना पड़ता है।

मन्त्री महोदय ने इसे गम्भीरता से लेकर

(1) टोंक से वाया कलमण्डा, डूंगरी – मालपुरा
(2) पीपलू से वाया लावा, डिग्गी– मालपुरा– टोडारायसिंह
(3) जयपुर से वाया दूदू– पचेवर, कचोलिया, लाम्बा सड़क एच1 मार्ग पर रोड़वेज़ बस चलाने के राज्य सरकार से स्वीकृति दिलवायी।

प्रतिनिधि मण्डल में महासंघ उपाध्यक्ष कैलाश गुर्जर, जगदीश शर्मा, प्रभू सिंह कुटला, सुनीता कंवर आदि शामिल थे।

कल्याण किसान सेवा समिति

ब्लॉक मालपुरा

कार्यालय : सिकोईडिकोन, प्रतापनगर, जयपुर रोड़, मालपुरा : 304502

सेवा में

श्रीमान् कैबिनेट मंत्री महोदय

राजस्थान सरकार, जयपुर

मान्यवर जी,

1.जयपुर–डिग्गी,कुरथल,देशमा,देशमी,सदरपुरा–मालपुरा।

2.टोंक– डिग्गी,कुरथल,देशमा,देशमी,सदरपुरा–मालपुरा।

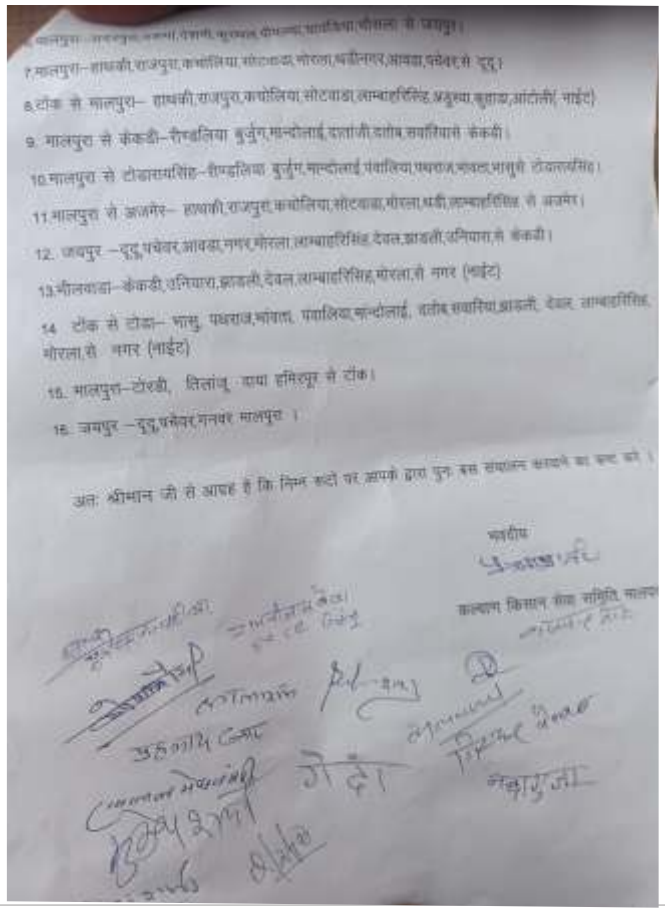

15. मालपुरा–टोरडी, तिलांजू वाया हमीरपुर से टोंक।

16. जयपुर –दूदू,पचेवर,नगर मालपुरा।

अदभुत बलिदान

1857 का जब स्वतन्त्रता संग्राम चल रहा था, इसके सूत्रधार पेशवा नाना साहब की गिरफ्तारी पर अंग्रेज सरकार ने 50 हजार रूपये का पुरस्कार घोषित कर रखा था।

लुका–छिपी की अनवरत यात्रा और भूख–प्यास से पीड़ित नाना साहब ने उस दिन एक परिचित देशभक्त बहिन के दरवाजे पर दस्तक दी। दरवाजा खोलते ही ग्रहिणी ने तुरन्त नाना साहब को पहचान लिया, ससम्मान नाना साहब आप! महिला के मुख से यह सम्बोधन निकला ही था कि उन्होंने उसे मौन रहने का संकेत किया। महिला बडे आदर से नाना साहब को घर के अन्दर लेकर गयी और भोजन कराया। सहसा द्वार पर उसे पति की आाहट सुनायी दी। उसके पति पुलिस में अफसर थे, घर में प्रवेश करते ही इन्स्पेक्टर साहब ने पूछना प्रारम्भ किया। आज यहां नाना साहब के आने की सूचना मिली है, जानती हो नानाजी पर 50 हजार रूपये का इनाम घोषित किया हुआ है? यह पुरस्कार हमें मिलें, तो सारा जीवन आराम से कट जायेगा! गृहिणी विचलित हो गयी, पर दृढ़ता से कहा यह तो देशद्रोह होगा, हमें नहीं चाहिये ऐसा कलंकित धन वैभव जो एक महान देशभक्त को पकड़वा कर मिले।'' विवाद गहरा गया, पति द्वारा अनेक तर्क दिये।

नाना साहब यह सब सुन रहे थे, वे छुपे हुये स्थान से बाहर निकल कर बोले–यह रहा आपका नाना साहब मुझे अंग्रेजों को सौंप दो। मेरे कारण आपका ग्रहस्थ जीवन दुःखद हो जाये, यह मुझे मान्य नहीं है। अपने ही घर में नाना साहब को छिपे देखकर पुलिस इन्सपेक्टर खुशी से झूम उठा और उसका हाथ तुरन्त पिस्तौल की ओर चला गया। हाथ ऊपर करो नाना साहब को इन्स्पेक्टर ने कहा, परन्तु वह ग्रहिणी शेरनी की तरह गरज उठी और कहा खबरदार जो नाना साहब पर गोली चलायी। यह हमारे सम्माननीय अतिथि है और वह चट्टान की भॉति नाना साहब के सामने खड़ी हो गयी। इन्स्पेक्टर ने धक्का मारकर अपनी पत्नी को हटाना चाहा तो झटके से गिरी पिस्तौल गृहिणी के हाथ में आ गयी। इससे पहले कि पुलिस अधिकारी नाना साहब की ओर बढ़ता, उस वीरांगना ने पिस्तौल की गोली स्वयं की छाती पर मार ली। उसके अन्तिम शब्द थे, देशद्रोह के बदले तुम्हें 50 हजार का ईनाम चाहिये न और मैं अपनी मातृभूमि के प्रति गद्दारी के पाप में भागीदार न होऊंगी।

यह तुमने क्या किया बहिन नाना साहब ने दौड़कर उसे उठाया व उसके रक्त का तिलक लगाया। इस अदभुत बलिदान से नाना साहब को अपार पीड़ा हुयी। इन्स्पेक्टर साहब तुम अपना कर्त्तव्य निभाओ, मुझे गिरफ्तार कर अंग्रेजों को सौंपकर 50 हजार का ईनाम लो! पुलिस अधिकारी अपनी पत्नी व नाना साहब के राष्ट्रीय प्रेम को देखकर भारी पश्चाताप में डूब गया। जाओ नाना साहब राष्ट्र तुम्हे पुकार रहा है और वह पुलिस अधिकारी भी कर्त्तव्य पथ पर चल पड़ा।

थाली में खाने को मिली हरी सब्जी

लाली देवी किरावल गांव की एक गरीब ब्राहमण परिवार की रहनी वाली महिला है। गांव की मालपुरा दूरी ब्लॉक से 30 किलोमीटर है जो जयपुर–डिग्गी मुख्य सडक से पश्चिम की ओर है।

लाली देवी एक साक्षर किसान है जिसकी उम्र 38 वर्ष है परिवार में 1 लडका व 2 लडकी है। इनके पास मात्र 2 बीघा जमीन है जिनसे इनकी आजीविका सुनिश्चित नहीं थी। जून 2024 में संस्था द्वारा गठित ग्राम विकास समिति की बैठक आयेजित की गई जिसमें आजीविका सुरक्षा गतिविधि के बारे में जानकारी दी गई जिसमें पोषण वाटिका के तहत छोटे परिवारों को अपने भोजन में खाने को हरी सब्जी किस प्रकार से प्राप्त हो सके पर चर्चा की गई।

इस महिला किसान से खेती से प्राप्त होने वाली आय के बारे में पूछा गया, जिस पर उसने बताया कि 1 बीघा में मक्का, बाजरा व 1 बीघा में, सरसों आदि बोते हैं, जिससे पशुओं के खाने के लिए चारा व अनाज हो जाता है। नगदी फसलों को बेचकर कुछ आमदनी प्राप्त होती है जिससे परिवार का घर खर्च चला लेते है।

इसके बाद ग्राम विकास समिति में प्रस्ताव लेकर पोषण वाटिका में इस महिला किसान का चयन किया गया। जुलाई, 2024 में किसान ने बरसात में लगने वाली सब्जियां करेला, लोकी, तुरई का बीज एवं फलदार पौधे दिये गये, परन्तु अतिवृष्टि होने के कारण किसान की फसल चौपट हो गई, जिससे उन्हें आर्थिक नुकसान हुआ, साथ ही आर्थिक तंगी का सामना करना पडा। संस्था के सहयोग से अक्टूम्बर, 2024 में वापिस किसान को टमाटर, मिर्ची, बैंगन, गोभी, पत्ता गोभी, मटर, पालक, मूली, गाजर सब्जी बीज का प्रदर्शन दिया गया जो पूरे खेत में प्रदर्शन लगाया गया, जिसमें उन्होंने नवाचार करते हुए टमाटर की खेती को बेलनुमा पद्वति से किया, जिसमें पाया कि इस तरीके से पैदावर अच्छी हुई।

किसान को उन्नत तकनीकि अपनाने हेतु प्रशिक्षण दिलवाया गया, जिसमें जीवामृत बनाने का तरीका सीखकर फसलों व सब्जीयों में स्प्रे कर, उनमें होने वाले रोगों से बचाया गया, जिससे बाजार से महंगी रासायनिक दवाईयों में होने वाली मोटी रकम को बचा पाया। खेत में सब्जियां आने पर लाली देवी को सप्ताह में 3 बार घर में खाने को थाली में हरी सब्ज़ी मिलने लगी, जिससे उनके परिवार को पोषण तत्व मिलने लगे साथ ही घर में खाने के बाद बची हुई सब्जियों को लाली देवी के पति राम किशन द्वारा गॉव– गॉव में जाकर बेचने का कार्य किया गया, जिससे उन्हें 20000 हजार रूपये की आमदनी प्राप्त हुई है। इस प्रकार से हरी सब्जी के साथ–साथ आर्थिक स्थिति भी सुदृढ हुई है।

तहसीलदार एवं
तहसील : माधोराजपुरा,

किसान सेवा समिति महासंघ

परिचय :-

किसान सेवा समिति महासंघ राज्य स्तरीय जन संगठन है– जो किसानों, महिलाओं, दलित, आदिवासी एवं वंचित वर्ग के सामाजिक–आर्थिक विकास एवं इनके हितों से जुड़े मुद्दों व अधिकारों की क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पैरवी करना है। जो विशुद्ध गैर राजनीति जन आन्दोलन पर आधारित है। महासंघ का प्रमुख कार्य राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण विकास से जुड़े मुद्दों को प्रकाश में लाना व उन पर सरकार का ध्यान आकृष्ट करवाना है। समान विचारधारा वाले संगठनों को संगठित करने के साथ–साथ उसमें राष्ट्रीय बोध, समतामूलक, शोषण मुक्त समाज की रचना आदि नीतियों के प्रति सहमति बनाना भी महासंघ का लक्ष्य है। हम मूल्य आधारित ऐसी शक्ति हासिल करना चाहते हैं कि सरकारों को ऐसी नीतियों को बदलने को मजबूर करने की क्षमता हासिल कर सके जो जनहित की न हो। स्थानीय ब्लॉक एवं जिला स्तर पर संगठनों एवं समुदाय प्रतिनिधियों की जागरूकता एवं क्षमता वृद्धि करना ताकि वे सामुदायिक अधिकारों को वास्तविक रूप से लागू करने एवं सुनिश्चित करने में स्थानीय सुशासन प्रक्रिया, पंचायत राज एवं जन–आन्दोलनों के साथ सहज़ता से जुड़े रहे। ऐसे मुद्दों पर प्राथमिकता रहेगी, जो आमजन से जुड़े हुए हों, विशेषतः प्रयास– दलित, वंचित, महिला, बच्चे व किसान से जुड़े होंगे।

वर्तमान समय के कार्य :-

जलवायु परिवर्तन, शिक्षा की विसंगतियों एवं समानीकरण, महंगाई, राहत कार्य सर्वे, जैव परिवर्धित एवं जैव विविधता, अकाल, चारा–पानी, सार्वजनिक वितरण, असंगठित मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ मिले इस सन्दर्भ में महिला उत्पीड़न, भू–अधिकार, नरेगा, घुम्मकड़ जातियों के हितों पर, राज्य बजट पर, स्वास्थ्य।

भावी योजना:- राज्य स्तरीय संगठन के प्रतिनिधि राज्य के सभी जिलों से जुड़े हों तथा हम एकजुट होकर राज्यस्तरीय प्रयासों को ज्यादा गति दो पायें।

प्राथमिकताएं :-

जलवायु परिवर्तन ,राज्य की स्थायी अकाल एवं जलनीति बनवाना व प्रभावी क्रियान्वयन करवाने का सतत प्रयास। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ समुदायों तक पहुँचाना सुनिश्चित करना। पंचायतों को उनके अधिकार दिलवाना। खाद्य सुरक्षा की बिल की अनुपालन करना। शिक्षा के अधिकार बिल की सही अनुपालना।

महिलाओं व दलितों के अधिकारों को दिलवाना। भू–अधिकार से वंचितों को अपना अधिकार दिलवाना। साझा समझ वाली संस्थाओं से नेटवर्किंग

सीख :- जीवन वास्तव में अनवरत सीखने एवं विकास करने की प्रक्रिया है, सीखने की प्रक्रिया प्रभावी एवं उपयोगी हों, अतः प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने साथ–साथ उस समाज की ताकत एवं कमज़ोरियों से परिचित हो जिसका वह अंग है।

किसान सेवा समिति महासंघ

स्वराज कैम्पस, एफ-159-160, सीतापुरा औद्योगिक एवं संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर-302022 (राज.)

टेलीफोन : 0141-2771488, 7414038811/22/33 फैक्स : 0141-2770330

UNIQUE PRINT IN • 9414363099